International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल का योगदान

डॉ कृष्णा देवी

हेड कांस्टेबल, कुवाटर न 22, न्यू पुलिस लाइन हिसार रोड़, फतेहाबाद

शोध - आलेख सार

यह वास्तविक तथ्य है कि भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है । भतिकाल की समय सीमा 1375 से 1700 संवत तक मानी जाती है । रहीम, तुलसी, सूर, जायसी, मीरा, रसखान आदि कवि इस युग की उपन है जिन्होंने धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत कविताओं, छंदों आदि के माध्यम से समाज में एक वैचारिक क्रांति को जन्म दिया । उनकी रचनाओं के कारण भकि युग को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है । इस काल में भगवान श्री राम के सच्चे विनम्र और सुंदर अवतार की पूजा की गई है । इस अवधि के दौरान प्रबंध और मुळक दोनों कविताओं की रचना की गई थी । इस काल में अवधी और ब्रजभाषा दोनों का ही मुख्य रूप से प्रयोग होता था और अनेक श्लोकों में रचनाएँ होती थीं । इस काल के काव्य में सभी रसों को समाहित किया गया था, लेकिन शांत और अलंकृत रस प्रधान रस है । इस शोध पत्र में लेखक ने भक्तिकाल का हिंदी साहित्य में योगदान पर शोध करने का प्रयास किया है

How to cite this paper: Dr. Krishna Devi "Contribution of Bhaktikal in Hindi Literature" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.2204-2206, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52273.pdf

IJTSRD52273

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

हिन्दी साहित्य पर पिछली एक सदी में बहुत काम हुआ है और नवीन युग के विषय विशेषज्ञों ने इसको कड़ियों को पिरोकर एक परिष्कृत साहित्य बनाने का प्रयास किया है हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक साहित्यिक ग्रंथ लिखे गए हिन्दी साहित्य की परम्परा पर विचार करें तो अनेक ऐसे ग्रंथ मिलते हैं जिनमें हिन्दी की प्रारम्भिक झलक दिखाई देती है। लेकिन वन कृतियों का ग्रंथों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता क्योंकि उनमें संभावनाओं का अभाव है। प्रसिद्ध विद्वान प्रियर्सन ने हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा है। भक्ति काल हिंदी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण काल है, जिसे इसकी विशेषताओं के कारण स्वर्ण युग कहा जाता है। के अंतर्गत कबीर, जायसी, सूर, तुलसीदास, रैदास और मीरा जैसी महान प्रतिभाओं भक्ति काव्य में रचनाएँ को ने हिन्दी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक साहित्य का स्वर्ण युग कहा। भक्तिकाल में दो धाराएं प्रवल रूप से नहीं और सांस्कृतिक दृष्टि से अंतर्विरोधों से परिपूर्ण होने के बावजूद भी इस काल में भक्ति की ऐसी धारा प्रवाहित हुई कि विद्वानों ने सर्वसम्मति से इसे हिंदी निर्गुण धारा और सगुण धारा निर्गुण धारा में इश्वर का निराकार मानकर सन्तान ज्ञान की चर्चा का मानकर सवालहुए निगुण धारा के रूप। ज्ञानाश्रया शाखा, जिसके प्रमुख प्रर्वतक कबीरदास थे और प्रेममार्गी शाखा, जिसके जायसी आदि सूफी कषि अनुयायी थे। सगुण भारा भी दो शाखाओं में प्रवाहित हुई। रामभक्ति शाखा जिसके प्रमुख अनुवायी गोस्वामी तुलसीदास थे और कृष्ण - भक्ति जिसके अनुयायी सूरदास थे इस प्रकार भक्ति भाव की प्रधानता होने के कारण इसे 'काल 'नाम दिया गया। इस काल के प्रारम्भ में मुसलमानों का राज्य स्थापित हो चुका था। उनके अत्याचारों के सामने सामान्य जनता की धर्म - भावना काफी दब चुकी थी। जनता अविश्वास होने लगा। अत: इस काल के कवियों का मुख्य उद्देश्य जनता में भगवान की महत्ता का प्रचार करना था ।

इस काल में भगवान के नाम, जप और कीर्तन को मुख्य स्थान दिया गया था। इस काल के किसी राजा के आश्रम में न रहकर स्वच्छन्द रूप से कविता किया करते थे। इस काल के कवियों ने प्राचीन रूडियों एवं अंधविश्वासों का खण्डन किया तथा पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र मे भी बहुत सुधार किया था। इस काल में सारा समान अश्लीलता, विलासिता और आडम्बर में दूबा हुआ था अधिकांश कविगण राजाओं तथा बादशाहों के आश्रम में में तथा उनको प्रसन्न करने में ही अपने को धन्य समझते थे। काव्यों में अश्लीलता आ गयी थी। अंगार रस की प्रधानता थी साहित्य का सुन्दर स्वरूप किसी को दिखाई नहीं देता था। धर्म का विकास रुक गया था। भगवान कृष्ण और राधा का स्वरूप भी लोगों ने बिगाड़ दिया था संत - महन्त भी राजसी ठाठ से रहते थे। विद्वानों का यह भी मत है कि इस काल के कवियों ने काव्य में मर्यादा का पूर्ण पालन किया है। घोर

श्रंगारी कविता होने पर भी कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन देखने को नहीं मिलता है।

भक्ति कविता भक्ति आंदोलन पर आधारित है। यह आंदोलन सामाजिक और वैचारिक है। भक्ति में धर्म साधना का नहीं भावना का विषय बन गया है इसलिए इसे धर्म का रसिक रूप कहा जाता है। इसी काल में राष्ट्रीय भावना और सामाजिक जागरूकता का उदय हुआ गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने और एक वर्ग को विशेष बनाने के लिए बनाई गई परंपराओं का पुरजोर खंडन करने के लिए एक क्रांतिकारी आंदोलन शुरू किया गया था। संकीर्ण राष्ट्रीयता के स्थान पर एक संपूर्ण राष्ट्र का रूप उभरने लगा। एक तरह से वैचारिक क्रांति की आवाज गूंजने लगी और समाज आधुनिकता की ओर बढ़ने लगा।

हिंदी भक्ति साहित्य की परंपरा की शुरुआत महाराष्ट्र के संत नामदेव से होती है। संत नामदेव ने हिंदी में रचना भी की है। भक्तिकाल के कवियों की पहली विशेषता यह है कि उन्होंने किसी दबाव में रचना नहीं की। प्रारंभिक काल और कर्मकांड काल के कवि दरबारी थे। वे अपने संरक्षकों के मनोरंजन के लिए कविता की रचना करते थे वे अपनी हार्दिक भावनाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर सके। उनके विपरीत, भक्ति कवियों को राजा की शरण की चिंता नहीं थी। उन्हें लोगों की प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं थी। कुम्भनदास का कथन "संतान कहाँ सौकरी सो काम "इस काल की विचारधारा सबूत है। इस काल के काव्य की विशेषता यह है कि भारतीय संस्कृति और नीतिशास्त्र की इससे पूर्ण रक्षा हुई। मुसलमानों के शासन काल में जब हिंदू धर्म पर हर तरफ से हमले हो रहे थे, तब भक्ति काव्य के माध्यम से हिंदू जाति और धर्म की रक्षा की जाती थी। संरक्षित भक्त कवियों ने हिंदुओं को अपनी नैतिकता पर दृढ़ रहने के लिए प्रेरित किया था ।

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल का योगदान

मुसलमानों के शासन काल में 18 वीं शताब्दी में केंद्रीय सत्ता के पतन के कारण क्षेत्रीय शासकों की संख्या में वृद्धि हुई और उन कवियों की संख्या में वृद्धि हुई जो केवल महलों के सुख के लिए कविता लिख सकते थे। यह काल आर्थिक और नैतिक पतन का भी था. समाज में सात्विकता और कर्मवाद की जगह भोगवाद और भाग्यवाद ने ले ली। जब भक्ति युग का आदर्शवाद अपने चरम पर था, तो उसका पतन होना तय था। महिला की हालत बद से बदतर होती जा रही थी और उसे सिर्फ भोग की वस्तु नकर इलाज किया जा रहा था। ऐसे में साहित्य का स्तर गिरना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

भक्ति आंदोलन की शुरुआत सबसे पहले दक्षिण के अलवर और नयनार संतों ने मध्ययुगीन काल की थी। यह आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर भारत में रामानंद द्वारा बारहवीं शताब्दी की शुरुआत लाया गया था। चौतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने इस आंदोलन को और अधिक अभिव्यक्ति दी। भक्ति आंदोलन का उद्देश्य हिंदू धर्म और समाज में सुधार और इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच सद्भाव स्थापित करना था। आंदोलन अपने उद्देश्यों में काफी हद तक सफल रहा। मध्यकालीन भारत का भक्ति आंदोलन किसी विशिष्ट या व्यक्तिगत ईश्वर के प्रति निष्ठा की अभिव्यक्ति के संदर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ये संत दूसरों की उपेक्षा या आलोचना करते हैं। उन्होंने केवल अपने प्रिय के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना व्यक्त की। तो यह एक व्यक्तिगत ईश्वर को अपनाने के अलावा अन्य आयामों को शामिल करने वाला एक आंदोलन था। भक्तिकाल और रीतिकाल दोनों ही मध्यकाल में आते हैं एक काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा इस अवधि के दौरान लगातार परिपक्व हुई और क्षेत्रीय दृष्टि से अखिल भारतीय विस्तार प्राप्त किया।

भक्ति आंदोलन को एकतरफा दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता है। इसका सबसे बड़ा कारण इस आंदोलन का बहुआयामी प्रभाव है। भक्ति आंदोलन का प्रभाव न केवल सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संदर्भों पर पड़ा, बल्कि कला और संस्कृति पर भी इसका प्रभाव बहुत गहरा था। इस आंदोलन में अवर्ण लेकर सवर्ण तक, महिला से लेकर पुरुष तक, शिक्षित से लेकर अशिक्षित और हिंदू से लेकर मुस्लिम तक सभी शामिल थे। यह आंदोलन अपने स्वरूप में लोकतांत्रिक था। इसके साथ ही इस आंदोलन का स्वरूप अखिल भारतीय था। भक्ति साहित्य इसी आंदोलन की उपज है। इसलिए भक्ति साहित्य को पढ़ते समय इस आंदोलन की प्रकृति और प्रकृति को ध्यान में रखना आवश्यक है।

भक्तिकाल काव्य धारा के कवियों ने विष्णु के अवतार राम की पूजा को अपना आधार बनाया था। भक्ति काल की सगुण भक्ति धारा में कृष्ण काव्य दर्शन और 'पुष्टिमार्ग 'ने कृष्ण भक्ति को बढ़ावा देने में का विशेष महत्व है। बल्लभाचार्य के 'शुद्धद्वैत बहुत योगदान दिया है सूरदास, परमानंद दास, कुम्भनदास, कृष्णदास, नंददास, चतुर्भुजदास, छतास्वामी और गोविंदस्वामी इस धारा के प्रमुख कवि है। लोक मनोरंजन की दृष्टि से यह काव्य धारा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

राम भक्ति साहिता में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के लोक रक्षक परखड़ा स्वरूप के साथ विनय शक्ति और सौंदर्य का सामजस्य प्रस्तुत किया गया है। राम काव्य धारा परंपरा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता कि राम भारतीय संस्कृति के आत्मा - नायक है। राम को आराध्य मानकर जिस लोक - मंगलकारी काव्य की रचना की गयी वह रामभक्ति काव्य के नाम से जाना जाता है। रामभक्ति काव्यधारा के भक्त कवियों प्रेरक स्वामी रामानन्द रहे है। स्वामी रामानन्द ने जनता के बीच रामभक्ति का प्रचार किया। उन्हीं की शिष्य परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस की रचना करके भारतीय जनता में रामभक्ति की पावन गंगा को प्रवाहित किया। इस काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास है। भक्ति काल की सगुण इस काव्य धारा में कृष्ण के लोक रंगों और माधुर्य से भक्ति धारा में कृष्ण काव्य का विशेष महत्व है भरपूर लीलाओं का चित्रण किया गया है। यह कविता कृष्ण के प्रति प्रेम की गहरी अनुभूति की कविता कवितावली पाती मंगल की मंगल रामायण, वैराग्य सांदीपनि सुरदास जी की कृतियों, सूरसागर, है। इस काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास है। तुलसीदास की रामचरितमानसः विनय पत्रिका दोहावली पूर सरावली और साहित्य सहरी है। कबीरदास जी की सखी सब, रमानी पद्मावत मलिक मुहम्मद जायसी और आखिरी कलाम आदि प्रमुख ग्रंथ है। इन ग्रंथों में रचनाओं के साथ - साथ काव्य के आवश्यक अंग जैसे रस, चनाद, अलंकार, प्रतिमा प्रतीक, योजना, रूपक भाव आदि का सुन्दर चित्रण किया गया है ।भक्तिकाल की विशेषताएं में

अवतारवाद की अवधारणा काव्य छंद, सत्संग की महिमा, समन्वय की भावना मूल्य युगबोध प्रबंध और मुक्तक काव्य परंपरा का प्रयोग, अलंकार, रस योजना, गिती काव्य परंपरा और भाषिक स्थिति आदि का चित्रण किया गया है ।

भकि काव्य भारा के साहित्य की मूल विशेषताएं:

1. साहित्य में एकेश्वरवाद को बढ़ावा देना।
2. सामाजिक कुरीतियों जैसे सुआछूत, जातिवाद, कर्मकांड आदि पर प्रहार ।
3. ईश्वर प्रेम और व्यक्तिगत सात्त्विक जीवन पर विशेष जोर (चरित्र निर्माण)।
4. भाषिक विभिन्नता ।
5. साहित्य के केंद्रीय विषय के रूप में आम लोग ।

निष्कर्ष

अतः यह स्पष्ट है कि भक्तिकाल की प्रमुख काव्यधाराएँ श्री निर्गुण काव्यधारा सूफी काव्य परम्परा, रामभक्ति काव्यधारा और कृष्णभक्ति काव्यधारा है। इस भक्तिकाल युग को स्वर्ण युग कहने का सबसे बड़ा कारण यह है कि इस काल में सदियों से चली आ रही गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए मानवतावादी, विवेकशील कवि और समाज सुधारक सामने आए। इस युग में रामानंद, बल्लभाचार्य कबीर, सूर, तुलसी जायसी, मीरा, दादूदयाल, रैदास, रसखान, रहीम आदि ने देशभक्ति की लहरों को जगाकर मानवतावाद का दिव्य संदेश दिया था। यदि भक्ति काल की तुलना हिन्दी के विभिन्न कालखंडो से की जाए तो निश्चय ही वह श्रेष्ठ सिद्ध होता है। इस प्रकार भक्तिकाल का महत्व साहित्य और भक्ति भाव दोनों ही दृष्टि से बहुत अधिक है। इसने सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को वांछित दिशा दी। इसलिए इस काल को 'स्वर्ण 'युग कहा जाता है भक्ति की उमंग या भक्ति की अपार धारा इस काल में कहीं भी देखी जा सकती है इसकी प्रधानता के कारण इस काल को भक्ति - काल का नाम देना काफी उचित और ज्यायसंगत प्रतीत होता है निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य के इतिहास का सर्वश्रेष्ठ काल कहा जा सकता है भावना पक्ष और कला पक्षय दोनों पक्षों की दृष्टि से यह काल सर्वश्रेष्ठ है, किन्तु इस काल का साहित्य नैतिक मूल्यों, समाज सुधार और धार्मिक सुधार के माध्यम से मानवतावाद की भूमि को तैयार करता है, जो आज तक हिन्दी के पथ प्रदर्शक का कार्य करता है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उक्त काल में हो रहे परिवर्तन उस समय की सामाजिक -मानसिकता की झलक प्रस्तुत कर रहे थे।

संदर्भ

[1] सिंह, वच्चन, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2004,

[2] कुँवर, राजीव, "इकाई -5 भक्तिकाल की पृष्ठभूमि "इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2008

[3] चतुर्वेदी राम स्वरूप, हिंदी साहित्य और संवाद का विकास, लोकभारती प्रकाशन, 2005, 4. शुक्ला, आचार्य रामचंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, 2009.

[4] रघुनंदन हजाम, "भारत में हिंदी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व "निबंध माला 11.9, (2019) 53-57,

[5] श्रीमान नवीन, "भक्तिकाल और भारतीय मानस "साहित्य संहिता, 2.1 (2016) 6-10.

[6] श्रीमान नवीन, "भक्तिकाल और भारतीय मानस "साहित्य संहिता, 2.1 (2016) 6-10. 8. कुंधर, राजीव, "इकाई -5 भक्तिकाल की पृष्ठभूमि "इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2008.

[7] बसुदा "हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग 'भक्तिकाल निबंध माला, 5.10, (2013).

[8] सिंह, योगेंद्र, 'संत रैदास', लोकभारती प्रकाशन, 1972

[9] शर्मा, रामगोपाल, हिंदी साहित्य का इतिहास प्रवृत्तियां एवं मल्यांकन, समीक्षालोक कार्यालय, 1973,

[10] शोभनाथ सिंह, "भक्तिकाल में रीतिकाव्य की प्रवृत्तियों और सेनापति ", (1972).